❋ 31 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] ओम् शान्ति का अर्थ है मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। और बरोबर शान्ति के सागर, सुख के सागर, पवित्रता के सागर बाप की सन्तान हूँ। पहले-पहल है पवित्रता का सागर। पवित्र बनने में ही मनुष्यों को तकलीफ होती है। और पवित्र बनने में बहुत ग्रेडस् हैं। हर एक बच्चा समझ सकता है, यह भी ग्रेडस् बढ़ती जाती हैं। अभी हम सम्पूर्ण बने नहीं हैं। कहाँ न कहाँ कोई में किस प्रकार की, कोई में किस प्रकार की डिफेक्ट जरूर हैं– पवित्रता में और योग में। देह-अभिमान में आने से ही डिफेक्टेड होत हैं।

2] स्वभाव भी मनुष्य को बहुत सताता है। हर एक को तीसरा नेत्र मिला है। उनसे अपनी जांच करनी है।

3] बाबा ने समझाया है मैं गरीब निवाज़ हूँ। गरीब झट बाप को जान लेते है। समझते हैं यह सब कुछ उनका है। उनकी श्रीमत पर ही हम सब कुछ करेंगे। उन्हों को तो अपना धन का नशा रहता है इसलिए वह ऐसे कर न सके इसलिए बाप कहते हैं मैं हूँ गरीब निवाज़।

❋ योग-

1] बाप सब कुछ बच्चों को समझाए फिर बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारी खाद निकल जाये। याद करने समय सारे दिन में जो कुछ दिया है, वह भी देखना है। मेरे में क्या अवगुण हैं, जो बाबा की दिल पर इतना नहीं चढ़ सकते? दिल पर सो तख्त पर।

2] बाबा हमको कितना प्यार करते हैं, कितना मीठा है, तकलीफ तो कोई देते नहीं। सिर्फ कहते हैं **इस चक्र को याद करो।** पढ़ाई कोई जास्ती नहीं है। एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ा है। ऐसा हमें बनना चाहिए। दैवीगुणों की एम ऑब्जेक्ट है।

3] 'बाबा' कहकर तो दिल ही खिल जाता है। बाप से वर्सा कितना भारी मिलता है। सिवाए बाप के और कहाँ भी दिल नहीं जाएगी। बाप की याद ही बहुत सतानी चाहिए। बाबा, बाबा, बाबा, बहुत प्यार से बाप को याद करना होता है।

4] बाप कहते हैं जितना समय तुम याद में रहेंगी, सर्विस भी करेंगी, भल कोई बंधन में रहती हैं, खुद सर्विस नही कर सकती परन्तु याद का भी उन्हों को बहुत बल मिलता है। याद में ही सब कुछ समाया हुआ है।

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– तुम्हें कभी भी विघ्न रूप नही बनना है, अन्दर में कोई कमी हो तो उसें निकाल दो, यही समय है सच्चा हिरा बनने का।

2] तो हर एक को अपके को देखना है– हम कहाँ तक सब्ज परी, नीलम परी बने हैं। ..... अपने को देखो सारा दिन क्या किया? बाबा को कितना याद किया? यह भी बाबा ने कह दिया है कि गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए बाबा को याद करना है।

❋ सेवा-

1] तुम हो ईश्वरीय मिशन। तुमको सबका उद्धार करना है। गायन भी है ना– भीलनी के बेर खाये। विवेक भी कहता है दान हमेशा गरीबों को करना है, साहूकारों को नहीं। तुमको आगे चलकर यह सब कुछ करना है।

2] सेवा का चांस हर एक को है, कोई भी बहाना नहीं दे सकता कि मैं नहीं कर सकता, समय नहीं है। उठते-बैठते १०-१० मिनट भी सेवा करो। तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे करो। मन्सा से, सुख की वृत्ति, सुखमय स्थिति से सुखमय संसार बनाओ। परमात्म कार्य में सहयोगी बनो तो सर्व का सहयोग मिलेगा।